DIGITAL EDITION
ISSUE NO.37

लोटपोट

हँसी और मस्ती की पाठशाला

51 YEARS ANNIVERSARY

VISIT…

लोटपोट

हँसी और मस्ती की पाठशाला

Visit:
www lotpot com

DIGITAL EDITION
ISSUE NO. 37

Founder
Lt. Sh. A.P. Bajaj

Chief Editor
P. K. Bajaj

Editor
Aman Bajaj

Joint-Editors
Anushka
Amisha

Editorial Department

Concept illustration direction
Harvinder Mankkar

Editorial Address:
LOTPOT FORTNIGHTLY
A-5, Mayapuri, Phase-I,
New Delhi-110064.
Ph.: 28116120, 28117636
Fax .: 91-11-41833139
Email: edit@mayapurigroup.com
Web.: www.mayapurigroup.com

Printed at ARORBANS PRESS,
Shree S. L. Prakashan
A-5, Mayapuri, Phase-I, N.D.110064.

Owner, Publisher, Printer
Parmod Kumar Bajaj

Printing Place:
A-5, Mayapuri, Phase-I, New Delhi-110064.

संपादकीय

संकल्प की शक्ति

खेल की कक्षा शुरू हुई तो एक दुबली-पतली लड़की किसी तरहअपनी जगह से उठी। वह एक शिक्षक से ओलम्पिक रिकार्ड्स के बारे में सवाल पूछने लगी। इस पर सभी छात्र हंस पड़े। शिक्षक ने व्यंग्य किया-'तुम खेलों के बारे में जानकर क्या करोगी। अपने ऊपर कभी नजर डाली है। तुम तो ठीक से खड़ी भी नहीं हो सकती, फिर ओलम्पिक से तुम्हें क्या मतलब? तुम्हें कौन सा खेलों में भाग लेना है जो यह सब जानना चाहती हो।' रूआंसी लड़की कुछ भी कह न सकी। सारी क्लास उस पर देर तक हंसती रही। अगले दिन जब खेल पीरियड में उसे बाकी बच्चों से अलग बिठाया तो उसने कुछ सोचकर बैसाखियां संभालीं और दृढ निश्चय के साथ बोली-'सर याद रखिएगा। अगर लगन सच्ची और इरादे बुलंद हों तो सब कुछ सभंव है। आप देख लेना, एक दिन यही लड़की सारी दुनिया को हवा से बातें करके दिखाएगी। उसकी इस बात पर भी समवेत ठहाका गूंज उठा। उस वक्त सबने इसे मजाक के रूप में लिया। लेकिन वह लड़की तेज चलने के अभ्यास में जुट गई। वह अच्छी और पौष्टिक खुराक लेने लगी, फिर वह कुछ दिनों में दौड़ने भी लगी। कुछ दिनों के बाद उसने छोटी-मोटी दौड़ में भाग लेना भी शुरू कर दिया। उसे दौड़ते देख लोग दांतो तले उंगली दबा लेते थे। तभी कई लोग उसकी मदद के लिए आगे आए। सबने उसका उत्साह बढ़ाया। उसके हौंसले बुलंद होने लगे। फिर उसने 1960 के ओलम्पिक में हिस्सा लिया और तीन स्वर्ण पदक जीतकर सबको हतप्रभ कर दिया। ओलम्पिक में इतिहास रचने वाली वह थी अमेरिकी धाविका विल्मा रूडोल्फ।

लोटपोट LOTPOT

LOTPOT title is registered with the R.N.I., Govt. of India. All rights are reserved with publisher for every content published in Lotpot. Nothing should be reproduced in any form without the permission of publisher. All contents published in the Lotpot are work of fiction and any resemblence to people,place etc is purely incidental. Illustrations are based on the imagination of artist and editor and /or pubisher are not responsible for it. Editor and publisher may not be in agreement with the opinion of writers over the published contents. If any body has any objection towards any published content, they are welcome to submit the same with the publisher and it will be published as well. All disputes will be subject to the jurisdiction of Delhi only.Rs 4/- surcharge extra for Nepal, Srilanka, Dubai and other Gulf countries.

नटखट नीटू

○ हरविन्द्र मांकड

रोबो, तुमने लाल जिल्द वाली कहानियों की किताब देखी है?

लाल जिल्द वाली क्यों.. और भी तो है कहानियों की किताबे?

पर मुझे वही चाहिए।

वो मुझे नहीं पता।

मैं किताबे जिल्द का रंग देखकर नहीं पढ़ता..

ओ. के. मैं डोगो से पूछ लेता हूं..

क्या बात है परेशान क्यों लग रहे हो टीटा?
तेरी हैल्प चाहिए..
वो जो तू पिछले हफ्ते मांग कर ले गया था। वो तो तू पढ़ कर वापिस कर गया था ना?
लाल जिल्द वाली एक कहानियों की किताब थी नीटू की तुमने वो कहीं देखी है..
तो ढूंढ ले खुद, मेरे पर क्यों रोब झाड़ रहा है?
तो क्या मैं दोबारा नहीं पढ़ सकता.. गुर्रर्र..

अरे जुगनू.. नीटू के पास एक लाल जिल्द वाली कहानियों की किताब थी।
यार.. तू तो स्पाई कैमरा है.. बता दे कहां रखी है। नीटू ने?
हां, यही ठीक रहेगा..
पता नहीं.. मुझे तो पढ़ना आता नहीं, जो मैंने ली होगी।
तू खुद चलकर नीटू से ही क्यों नहीं पूछ लेता..

नीटू.. वो तेरी लाल जिल्द वाली कहानियों की किताब चाहिए थी।
देता हूं पर बता तो दे.. बार बार वही किताब क्यों चाहिए।
है कुछ खास उसमें.. तू बहस ना कर, बस मुझे वो लाल जिल्द वाली किताब दे दे..
तू हर हफ्ते किताब मांगने क्यों आ जाता है

क्योंकि एक बार उसमें से सौ का नोट पड़ा मिला था.. सो हर बार इसलिए मांगता हूं कि क्या पता इस बार पांच सौ या हजार रूपये का नोट उसमें रखा मिल जायें..
गुररर्र

स्वाइन फ्लू के लक्षण और सावधानियां..

1 यदि किसी मरीज को 100 डिग्री सेल्सियस से अधिक बुखार हो और साथ ही खांसी और गले में खराशा की शिकायत हो तो ये स्वाइन फ्लू के लक्षण हो सकता है।

2 एच.वन.एन.वन फ्लू के लक्षण भी मौसमी फ्लू के समान ही होते है। किन्तु एच.वन.एन.वन फ्लू की दशा में बिमार को उल्टियां और दस्त भी आते है।

3 यदि बीमार को सांस लेने में कठिनाई हो रही हो तो डॉक्टर की सलाह पर उसे अस्पताल में भर्ती करवा देना चाहिए।

4 फ्लू का वायरस खांसी और छींक में निकली बूंदों से फैलता है।

5 फ्लू का मरीज 5 से 7 दिन तक और मरीजों को संक्रमित कर सकता है।

6 बीमारी के 7 दिन बाद तक और बुखार के एक दिन बाद तक सावधानी बरतनी चाहिए।

7 बीमार को चाहिए कि वो हाथ पर, या रूमाल पर खांसी न करे। अच्छा हो, यदि, टिशू पेपर का प्रयोग किया जाये जो दोबारा इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

8 फ्लू के रोगी से 3 से 6 फुट दूर रहने की सिफारिश की जाती है।

बाल कहानी

कलाकार

सूर्य नगर में धनंजय नाम का एक बहुरूपिया रहता था अपनी रूप बदलने की कला को प्रदर्शित कर वह लोगों को प्रसन्न करता था। और अपनी जीविका चलाता था इस कला में वह इतना दक्ष था कि कई बार लोग उसे पहचान नहीं पाते थे।

एक बार सूर्यनगर में एक विशाल मेले का आयोजन हुआ विभिन्न कलाकारों ने वहां अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। तभी जनता ने देखा कि स्वंय महामंत्री मंच पर खड़े है और कुछ कहना चाहते है। महामंत्री के निकट शीघ्र ही भीड एकत्र हो गयी तब महामत्री बोले मैंने सभी कलाकारों का प्रदर्शन देखा अपने राज्य में इतनी प्रतिभायें छुपी हुई है यह देखकर मुझे अत्यंत हर्ष हुआ। मैं महाराज से कहूंगा कि वह भी यहां आयें और कलाकारों को स्वयं पुरस्कार प्रदान करें। पंडाल हर्ष ध्वनि से गूंज उठा।

तभी महामंत्री ने ऊपरी वस्त्र उतार फेंके। अब जनता के समक्ष साधारण कपड़ों में धनंजय खड़ा था क्षण भर सभी हतप्रभ रह गये। फिर तो धनंजय के ऊपर मानों मुद्राओं की वर्षा होने लगी। इस कार्यक्रम के पश्चात एक विद्वान व्यक्ति जो धनंजय से मिला और उसने राजा के समक्ष अपनी कला प्रदर्शित करने को कहा। धनंजय को भी यह सुझाव पसन्द आया।

एक मोहिनी स्त्री का वेश धारण कर धनंजय दरबार में जा पहुंचा सभी दरबारी और राजा उसके रूप पर मुग्ध हो गए। तत्पश्चात धनंजय ने अपना वास्तविक परिचय दिया। राजा भी उसकी कला से प्रसन्न हुए और उसे कुछ स्वर्ण मुद्राये देकर नित्य एक नया रूप धरकर दरबार में आने को कहा।

अगले दिन धनंजय एक सन्यासी को वेश धरकर दरबार में गया उसने शास्त्रों

की और दर्शन की गुण व्याख्या की और ईश्वर की महत्ता से सबका परिचय कराया राजा उसके इस वास्तविक से लगने वाले रूप पर अत्यन्त प्रसन्न हुये और उसे सौ स्वर्ण मुद्रायें पुरस्कार में देनी चाही लेकिन धनंजय ने कहा में सन्यासी हूं। मुझे धन से क्या प्रयोजन, और शान्त कदमों से दरबार से बाहर निकल गया।

सन्यासी के बाद धनंजय ने नर्तकी का रूप धारण कर नर्तक के रूप में उसने लय और ताल पर ऐसा सुमधुर नृत्य प्रस्तुत किया कि सब दंग रह गये। राजा ने उसे पुनः सौ स्वर्ण मुद्रायें पुरस्कार में देनी चाही लेकिन धनंजय ने कहा, हे महाराज आपका यश सुनकर मैं अत्यंन्त दूर से आयी हूं। आशा है आप मेरी कला का उचित सम्मान करेंगे।

राजा क्रोधित होकर बोला, यह क्या मजाक है? कल तो तुमने एक भी स्वर्ण मुद्रा नहीं ली थी और आज सौ भी कम पड़ी रही है। एक ही दिन में व्यक्ति का लालच बढ़ते मैंने कभी नहीं देखा।

धनंजय ने धीरे से मुस्करा कर शान्त स्वर में उत्तर दिया महाराज कल मैंने एक सन्यासी का रूप बनाया था। अतः सन्यासी स्वभाव के अनुरूप ही व्यवहार किया। सन्यासी को माया से कोई मोह नहीं होता किन्तु एक नर्तकी तो विषयों की दासी होती है। नर्तकी अपनी कला का प्रदर्शन कर यहीं चाहती है कि अधिकाधिक धन प्राप्त हो अतः आपकी सौ स्वर्ण मुद्रायें पर्याप्त नहीं है धनंजय के उत्तर से महाराज अत्यन्त प्रसन्न हुये और उसे पांच सौ स्वर्ण मुद्रायेंप्रदान की।

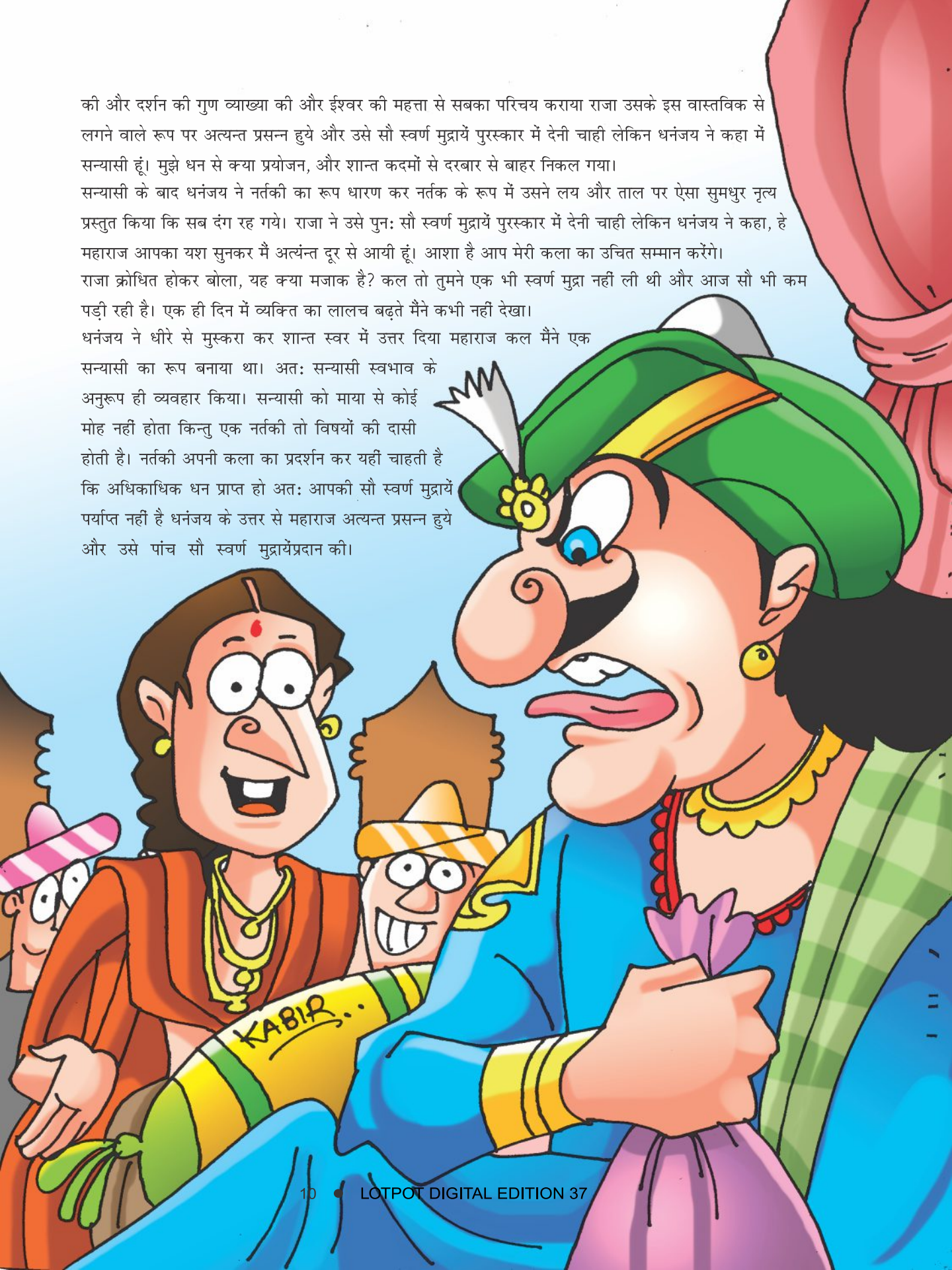

पिछले दिनों एक तांत्रिक बाबा किसी के बालों पर मंत्र पढ़कर उसकी आत्मा को सिद्ध करना चाहता था और इस काम के लिए उसका चेला नूरी जिन्न की चोटी काट लाया था।

शेख चिल्ली

©COPYRIGHT

तुम्हारी चोटी क्या चिड़िया ले गई घोंसला बनाने को?
वही तांत्रिक ले गया है अपना कबाड़ा करवाने के लिए।
इतने बड़े जिन्न की चोटी काटी है। अब तो मैं चेला क्या, तांत्रिक बाबा का भी गुरू बन जाऊंगा।
बड़े जिन्न की चोटी काटी है तो अब तू मेरी मंत्र सिद्धी का भी बड़ा कमाल देख चेले।
जय प्रचण्ड देवता..
जय महाकाल..
जय..जय..जय..
इतने बड़े जिन्न की आत्मा..
बस में आ रही है।
बस में नहीं.. यह तो हवाई जहाज में सफर करने वाली आत्मा है गुरू जी।

इस आत्मा को अपने वश में करके तो मैं धरती क्या आकाश पर भी राज करूंगा चेले।
सत्यवचन महाराज मगर...
अभी तो यह आपको पाताल में गाड़ रही है गुरू जी।
अभी रॉकेट बनी थी। अब फिर चोटी बन गई। मुझे तो लगता है, यह आपकी आत्मा को अपने बस में करने के चक्कर में है गुरू जी।
तभी वहां शेखचिल्ली पहुंच गया।
लगता है चोटी ने अपना थोड़ा सा कमाल तो दिखा दिया है।
पर लगता है अभी बाबा की तसल्ली नहीं हुई।

यह क्या हो रहा है गुरू जी?
मैं एक बहुत बड़े जिन्न की आत्मा को सिद्ध कर रहा हूं। पर तू यहां क्या कर रहा है? भाग जा। नहीं तो मंत्र पढ़कर यहीं भस्म कर दूंगा।
अंत्र...बंत्र...पंत्र..मंत्र...षडयंत्र..।
जय महाकाल के देवा.. इसको दास बना दे मेरा..।
इस बार कोई हाईपावर का मंत्र पढ़ा है गुरू नें।
यह कैसी चोटी है गुरू जी। मंत्र ने षडयंत्र बना दिया जान लेवा।
आगे देखें...

बाल कहानी

दिव्य शक्ति

उन दिनों रामकृष्ण परमहंस बेहद बिमार थे चारपाई से उठने की शक्ति उनमें नही बची थी उनके निकट संबंधी और भक्तगण उनकी इस दशा पर बेहद चिंतित थे। सभी को उनके अंत समय का आभास हो चला था। उनके दर्शन करने वालों की कतार हमेशा उनकी कुटिया में लगी रहती थी। रामकृष्ण स्वामी के आंगन में एक खजूर का पेड़ लगा था। उस वृक्ष का रस अपनी मिठास के लिए दूर-दूर तक मशहूर था।

एक बार रामकृष्ण परमहंस से मिलने उनके बहुत से भक्तों के बच्चे भी आए थे। रस से भरे वृक्ष को देख नन्हें बच्चे अपना लोभ संभाल नहीं सके परन्तु उस खजूर के वृक्ष के तने में एक भयानक नाग का बिल था बच्चों को इसकी जानकारी नहीं थी। बच्चों ने वृक्ष पर चढ़ने की योजना बनाई। रस पीने से पहले वे तालाब में नहाने गए। इतने में

किसी तरह परमहंस के कानों तक बात पहुंच गई। वे जानते थे कि मना करने पर भी बच्चे नहीं मानेंगे। ढ़ेर सारे नन्हें बच्चों की जान खतरे में देख रामकृष्ण कांप उठे।

किसी तरह उठकर वे नाग के बिल के सामने पहुंचे और नाग देवता को पुकारकर बच्चों की रक्षा की प्रार्थना करने लगे। नाग प्रकट हुआ और रामकृष्ण के आगे सर झुका कर वापस बिल में चल गया। रामकृष्ण वहीं बिल के सामने पहरेदार बनकर बैठ गये। बच्चे आये और रस पीकर संतुष्ट हुए।

वृक्ष के पास बिमार परमहंस को बैठे देख जब बड़ों को सारी बातों का पता लगा तो वो अवाक रह गए। जो व्यक्ति अपनी भारी बीमारी के कारण पल भर के लिए भी उठने में असमर्थ था वह आंगन में कब से बैठे रहे भक्तों ने पूछ ही लिया, 'स्वामी जी, यह कैसे संभव हुआ ?'

स्वामी रामकृष्ण परमहंस मुस्कुराते हुए बोले, 'जब किसी के प्राणों की रक्षा की जिम्मेददारी आ पड़ती है तो बिमार शरीर में अपने आप शक्ति आ ही जाती है। अगर विश्वास न हो तो खुद ऐसा करके देखों।' परमहंस की बात पर सभी अभिभूत हो उठे।

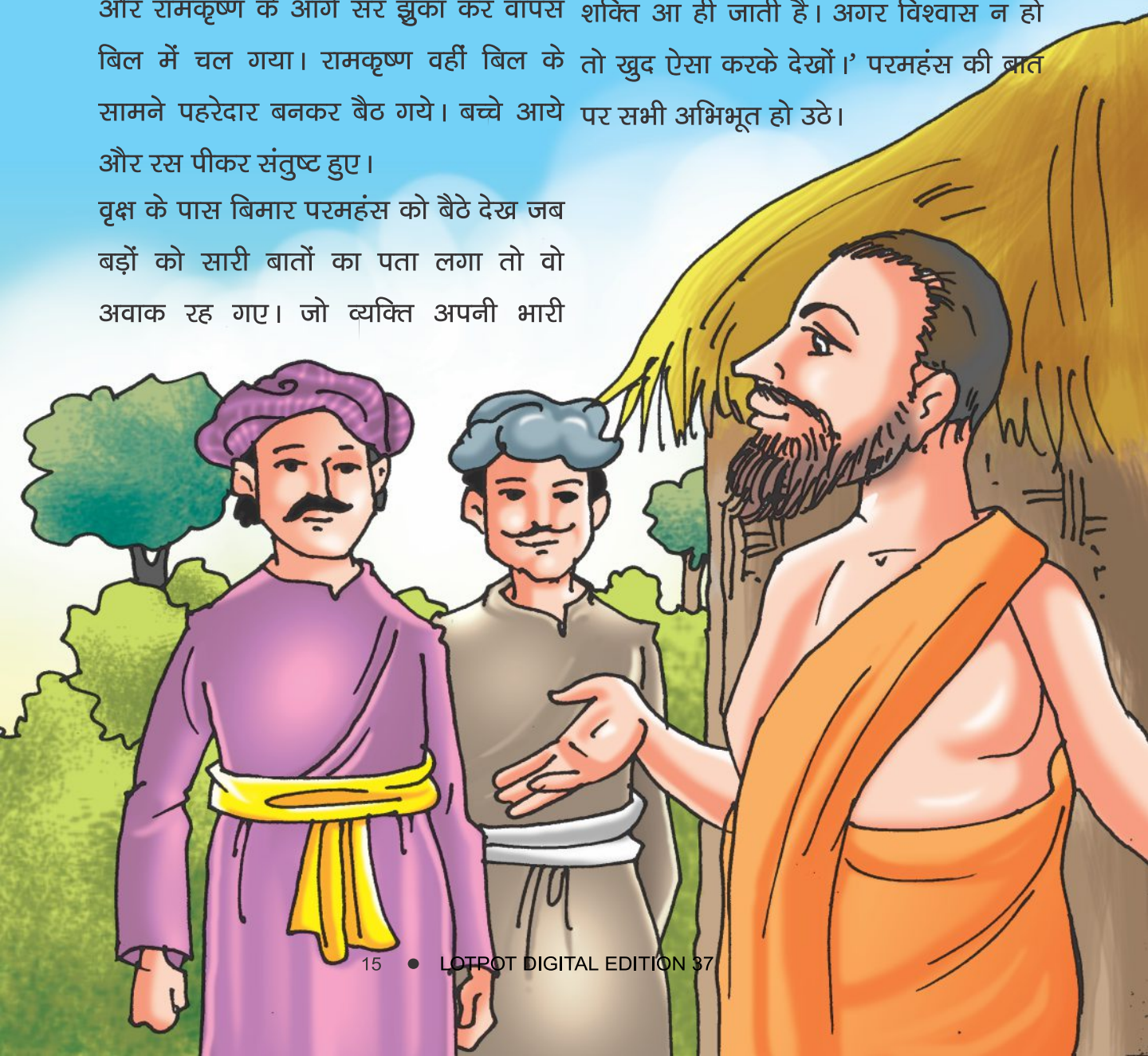

मोटू, पतलू, घसीटा एवं डा. झटका कॉपी राईट एक्ट व ट्रेडमार्क के अन्तर्गत लोटपोट के लिए रजिस्टर्ड हैं।

मोटू पतलू और छः हाथ वाला पतलू बाबा..

कथानक एवं चित्रांकन –हरविन्द्र मांकड़

आखिर तुझे परेशानी क्या है पतलू?
यार मेरे हाथों में दम ही नहीं है.. कोई भी भारी चीज उठा नहीं सकता..
पर मुझे जल्दी अपने हाथों की ताकत बढ़ानी है ताकि तीन आदमियों का काम मैं अकेले कर सकूं।
थोड़ी ताकत की चीजें खाया कर.. सब नार्मल हो जायेगा..

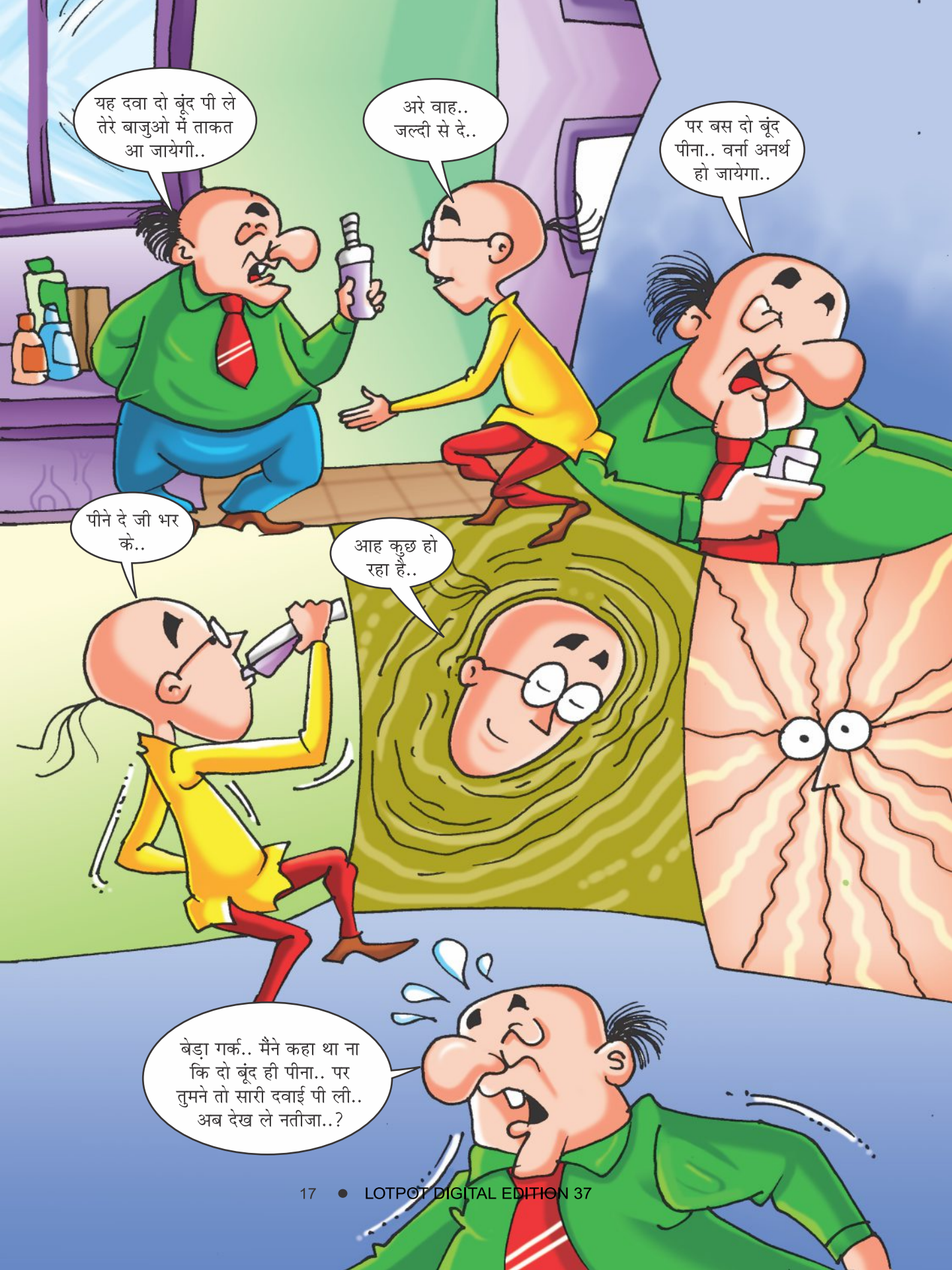
यह दवा दो बूंद पी ले तेरे बाजुओ में ताकत आ जायेगी..
अरे वाह.. जल्दी से दे..
पर बस दो बूंद पीना.. वर्ना अनर्थ हो जायेगा..
पीने दे जी भर के..
आह कुछ हो रहा है..
बेड़ा गर्क.. मैंने कहा था ना कि दो बूंद ही पीना.. पर तुमने तो सारी दवाई पी ली.. अब देख ले नतीजा..?

यह क्या हो गया.. मैंने तीन तीन आदमियों जितना काम करने को बोला था.. तीन आदमियों के हाथ नहीं मांगे थे.. गुर्रर्र..
क्या गलती कर दी झटके तुमने?
तू खुद ही देख ले..
गुर्रर्र..
ओये पतलू.. तू तो एलियन बन गया.. छः हाथ वाला एलियन..
बूहूहू.. मुझे इस मुसीबत से छुटकारा दिलवाओ..

अब तेरा कुछ नहीं होगा..हा हा हा..
??
अरे होगा क्यों नहीं.. हमारे घर छः हाथ वाले बाबा का अवतार हुआ है.. बाहर चलकर देखों.. लोग दर्शन करने आये है।
यानि तुमने पूरे फुरफुरी नगर को बता दिया..
जय हो छः हाथ वाले पतलू बाबा की..
साक्षात भगवान का रूप है..
अब फुरफुरी नगर के दिन फिर जायेगे..
हम तो दर्शन करके धन्य हो गये..
जय बाबा की..

अरे बात यही दबा दो.. मामला बिगड़ जायेगा.. बूहूहू
चुप कर झटके.. कमाने के दिन तो अब आये है..
चढ़ावा चढ़ेगा.. फल फ्रूट चढ़ेंगे..
पतलू बाबा मेरे बेटे को पास कर दो..
बाबा.. मेरा बैंक बैलेस डबल कर दो..
तथास्तु!!
मेरा होमवर्क कर दो..
लोग पतलू के आगे फल व पैसे का अर्पण करने लगे।

बाबा, दस हजार का माथा टेका है.. मेरी तरक्की करवा दो..
बाबा, पूरा साल देसी घी का हलवा चढाऊंगी.. मेरे बेटे को अच्छे स्कूल में दाखिला दिलवा दो..
चढ़ावा चढ़ाओ मनचाही मन्नत पाओ..
बाबा हर इच्छा पूरी करेगे.. जैसा माल वैसा हाल करेगें..
मेरी दवा का असर बस खत्म होने वाला है.. अब जो होगा वो आप खुद समझ लो पाठको..
तभी दवा का असर खत्म होने लगा और पतलू के बाकी हाथ गायब होने लगे।

धोखा!! नकली हाथ गायब हो गये..
यह पतलू बाबा ढोंगी हैं.. पैसे के लालच में बाबा बना था
इन्हे हमारी भावनाओं से खेलने की सजा मिलेगी.. गुर्रर्र
मैंने पहले ही कहा था कि दवा का असर ज्यादा देर तक नहीं रहेगा.. अब तुम्हारे साथ मैं भी बेमतलब पिट जाऊंगा..
गुर्रर्रर्र...

जब सारा खेल लोगों की समझ में आया तो उनका गुस्सा फूट पड़ा। फिर तो चारों की जम कर पिटाई हुई।
लात..
ठाक..
धिशुम..
मार डाला..
घूसां..
हाय बचाओ..
बूहूहू.. मैं तो बिना मतलब के पिट गया..
तू ऐसी खुराफाती दवाएं बनाता ही क्यों है.. बूहूहू..
बनाता भी है तो पतलू जैसे बेवकूफ को पिलाता क्यों है..

यात्रा

कोणार्क

कोणार्क ओडिसा राज्य में 13वी शताब्दी में बने सूर्य मन्दिर के लिए विख्यात है। अनुमान है कि इस मन्दिर का निर्माण 1250 ई के आसपास राजा नरसिंह देव प्रथम ने कराया था। यह मन्दिर वास्तु शिल्प का एक अनोखा नमूना है। इसे एक विशाल रथ के आकार में बनाया गया है। रथ के पत्थर के पहियों, खम्बो और दीवारों पर अत्यंत कलात्मक मूर्तिया गढ़ी हुई है। रथ में 12 जोड़ी पहिये बनाये गये है। प्रत्येक पहिये का व्यास लगभग तीन मीटर है। रथ को खीचने के लिए सात घोडे बनाये गए है।

पहियो के सम्बंध में अत्यत आवश्यक जानकारी यह है कि इन की रचना सूर्य घड़ी के रूप में की गई है और इन की सहायता से ठीक ठीक समय की गणना की जा सकती है।

यह मन्दिर चन्द्रभागा नदी के तट पर बनाया गया था पर अब यह नदी इससे काफी दूर हो गई है। मन्दिर का मुख्य द्वार पूर्व की उमेट है और सूर्य की पहली किरणे इसी पर पड़ती है।

मन्दिर के कुछ अंश टूट फूट गए है। लेकिन यूनेस्को ने इसे एक हैरिटेज साइट के रूप में स्वीकार किया हुआ है। कोणार्क पुरी से 35 कि.मी. की दूरी पर स्थित है- राजधानी भुवनेश्वर से इस की दूरी लगभग 60 कि.मी. है पुरी और भुवनेश्वर दोनों ही स्थानों से यहां तक आसानी से पहुंचा जा सकता है। कोणार्क के सम्बंध में अर्थिक जानकारी 18002081414 दूरभाष से प्राप्त की जा सकती है।

दिमागी कसरत

दिए गए चित्र में सात गलतियां है,
उन्हें ढूंढो और बन जाओ लोटपोट के जासूस

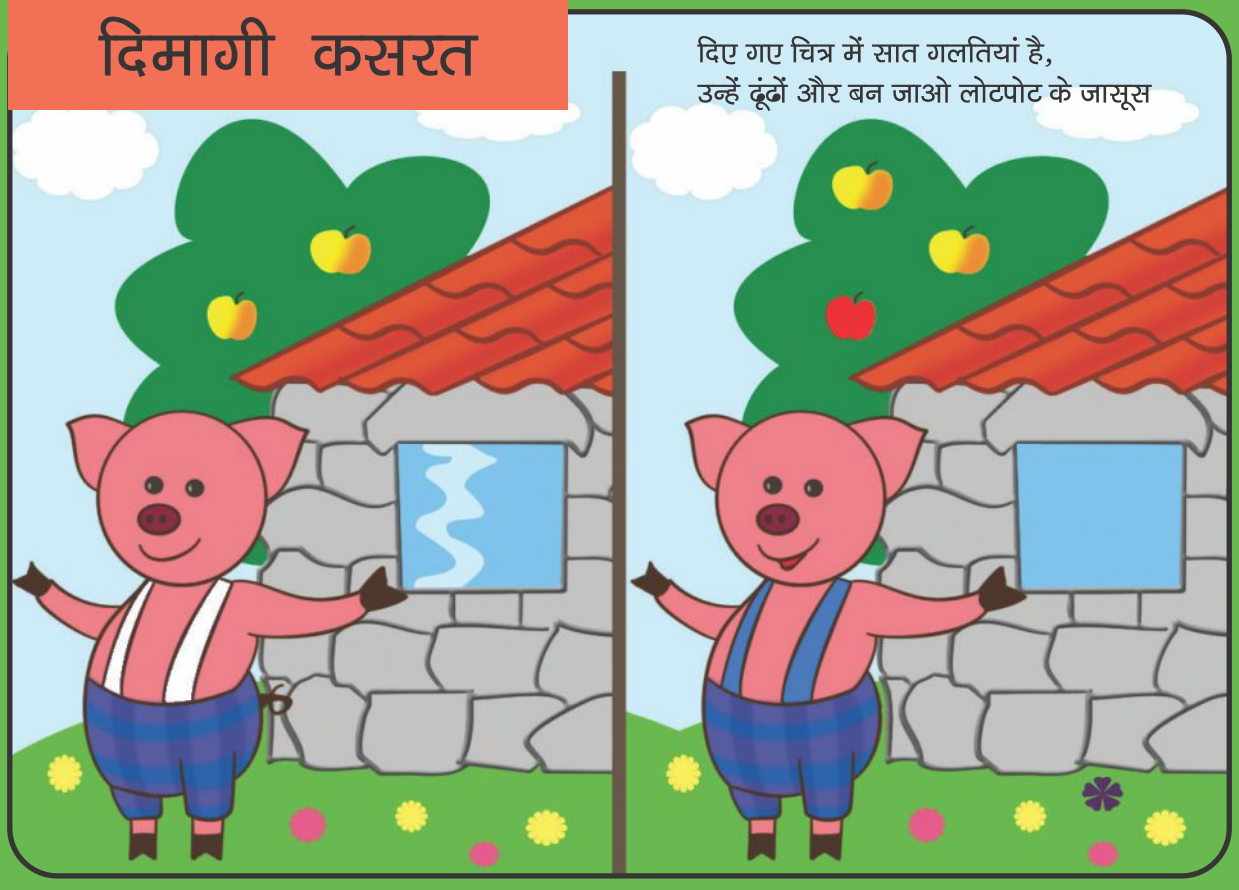

बाल कहानी

झूठी शान आफत में जान

अविनाश आज उदास मन से स्कूल से घर लौटा। 'क्या स्कूल में किसी से झगड़ा हो गया या फिर अध्यापक जी ने पढ़ाई के बारे में मारा? पता नहीं अविनाश आज क्यों उदास' है।

अविनाश को उदास देख उसकी मम्मी के मन में तरह तरह के प्रश्न उमड़ने लगे। अविनाश के सिर पर हाथ फेरते हुए आखिर मम्मी ने पूछा 'क्या बात है बेटे अविनाश? आज उदास कैसे बैठे हो?'

'मम्मी का इतना कहना था कि अविनाश की आंखो से आंसू झुलकने लगे। मम्मी ने सांत्वना देते हुए पूछा 'क्या अध्यापक जी ने मारा है? या किसी ने झगड़ा हो गया? मैंने तो तुम्हें कभी उदास नहीं देखा।'

नही मम्मी, आज मेरे साथी दोस्त पंकज, रोहित और राणा ने मेरी खिल्ली उड़ाई है।' अविनाश ने सुबकते हुए कहां। 'क्यो?' 'वे सभी स्कूल में खाने के लिए पांच पांच, दस-दस, रूपये लाते है। आज मै भी उनके साथ था मैंने भी कैन्टीन वाले से पचास पैसे की चीज देने को कहा तो दोस्तों ने कहा 'कंजूस पिता का कंजूस बेटा' अविनाश ने एक ही सांस में अपनी बात पूरी कर दी।

'तो बेटे इसमें रोने की क्या बात है? कल से उनका साथ छोड़ दो।' चलों आओ अब खाना खातें है अविनाश ने खाना खा लिया लेकिन अभी तक उसका मन शांत नहीं हुआ था वह स्कूल का होमवर्क करके खेलने निकल गया। खेलने के बाद जब घर आया तो पापा ऑफिस से आ चुके थे उसने पापा से कोई बात नहीं की। उदास मन से पढ़ने बैठ गया। अभी तक स्कूल वाली बात उसके दिमाग में घूम रही थी।

रात को सब सो चुके थे, लेकिन अविनाश की आंखो में नींद कोसो दूर थी। वह दोस्तों के साथ बराबर में खड़ा होना चाहता था। वह रात भर इसी सोच

में डूबा था कि उसके दिमाग में एक तरकीब आ गई। वह खुशी से झूम उठा। उसने मम्मी की गुल्लक से चुपचाप पांच रूपये निकाल लिए अब तो पंकज, रोहित और राणा के साथ उसकी अच्छी पटने लगी। अविनाश रोज मम्मी की गुल्लक से पांच रूपये निकाल लेता। उसकी मम्मी को बात का पता नहीं चला। क्योंकि गुल्लक में उन्होंने कभी हाथ डालकर नहीं देखा था

स्कूल में बोर्ड के फार्म भरने शुरू हो गए थे तथा इस बार अविनाश भी हाई स्कूल बोर्ड का विद्यार्थी था। उसे फार्म के साथ फीस भी जमा करानी थी। वह मम्मी के पास जाकर बोला 'मम्मी कल मुझे एक सौ पचास रूपये दे देना, क्योंकि कल मै बोर्ड की फीस जमा करांऊगा तथा कुछ किताबें भी लानी है।

मम्मी ने हां कहकर सिर हिलाया और काम में लग गई अगले दिन अविनाश ने स्कूल जाते समय मम्मी से रूपये मांगे, अविनाश की मम्मी कमरे में गई और गुल्लक उठा लाई, उसमें से पैसे निकालने लगी। लेकिन उसमें कम पैसे पाकर बोली 'अरे यह क्या, 35 रूपये?'

अविनाश का मुंह पीला पड़ गया, वह बोला 'अरे क्या इसमें इतने ही पैसे होंगे..। अविनाश की मां ने कहा 'नहीं बेटा! मैने तो इसमें कुछ दिन पहले ही 200 रूपये रखे थे और वो भी तुम्हारी स्कूल की फीस के लिए। क्या तुमने तो नहीं लिए?

अविनाश का सिर शर्म से नीचे झुक गया। वह सुबक उठा 'मम्मी, मुझे क्षमा कर दो। मम्मी, मैंने ये पैसे मित्रों के सामने शान दिखाने के लिए चुराये थे। मुझे माफ कर दो अविनाश ने सच्चाई बयान करते हुए कहा।

अविनाश को अपनी गलती का अहसास हो चुका था, इसलिए उसके मम्मी पापा ने उससे कुछ नहीं कहा। अविनाश की फीस का इंतजाम पापा ने उधार लाकर कर दिया। अविनाश ने मम्मी पापा से वायदा किया कि वह अब कभी झूठी शान नहीं दिखाएगा और सदैव सच्चाई का सामना निडरता के साथ करेगा।

भाग-2

नहले पे दहला

नहीं नहीं पाटे जी! एजेन्सी का कोई आदमी होता तो उसे मालूम होता कि सुधा उस रोज़ ऐजेन्सी में ही रात को रुक गई थी। इसलिए उसको वह हत्या के केस में नहीं फँसा सकता था!
अरे! आप किसे समझा रहे हैं! यह तो अक्ल से पैदल है!
अक्ल से पैदल है! - अबे चपड़घोंचू! यह भी तो हो सकता है कि उसे पता हो कि उस रात मनोहर सुधा के घर आनेवाला है! और सुधा को रात में एजेन्सी में रुका पाकर वह इस -
अवसर का फ़ायदा उठा कर मनोहर लाल जोशी का क़त्ल कर आया हो! क्या ऐसा नहीं हो सकता इन्स्पैक्टर घोरपड़े?
सरासर हो सकता है मि० पाटे खाँ!
हाँ! यह बात भी ठीक हो सकती है मगर सुधा के आफ़िस में ऐसा कौन हो सकता है जिसकी मनोहर से खुन्दक हो?
अगर इस सवाल का जवाब मिल जाए तो केस ही हल न हो जाए मि० काटे!
या खुन्दक किसी की सुधा से ही हो! इसलिए उसके प्रेमी मनोहर का क़त्ल कर दिया गया हो?
यह बात तो - कुछ जमती ही नहीं यह तो वही बात हुई की - थाली से जलेबी फेंक कर थाली चाटने लगो!

मेरा तो दिमाग भन्ना गया है इस केस के बारे में सोच सोच कर! - ओफ्हो!
अगर ऐसा है तो - एक एक कप कॉफ़ी का हो जाए मि० घोरपड़े!
कॉफ़ी का कप हो जाए --! अबे - कच्चे अमरूद कॉफ़ी का सामान है यहाँ ---
-- या पैसे पड़े हैं तेरी जेब में बाहर कॉफ़ी पीकर आने के?
ओह! यह तो मुझे ध्यान ही नहीं रहा! वाक़ई ---!
ध्यान ही नहीं रहा! सुबह भी मैं अगर डबलरोटी न उठा लाया होता तो--!
ठीक है! ठीक है! काटे डार्लिंग! डॉंट फ़िकर - हमारे साथ इन्स्पैक्टर साहब जो हैं!
म-- मगर पैसे तो मेरे पास भी नहीं हैं --- दर-असल मैं बटुवा घर भूल आया हूँ!
ओह! तब तो फिर - मनोरमा से मिलने चलते हैं। कॉफ़ी भी पी लेंगे, केस पर काम भी हो जाएगा!

सभी इन्सपैक्टर घोरपड़े की जीप में बैठ कर सीधे सीधे रोड मनोरमा के घर चल दिये।
POLICE
मनोरमा उन्हें घर पर ही मिल गई —
नमस्कार इन्सपैक्टर साहब!
नमस्ते मनोरमा जी। ये मेरे मित्र हैं जासूस पाटे खाँ! और ये ---
उनके सैक्रेटरी हैं - काटे खाँ!
नमस्कार!
नमस्ते!
नमस्कार! बड़ी खुशी हुई आप लोगों से मिल कर! आप दोनों की तो मैं तारीफ़ इन्सपैक्टर साहब से कई बार सुन चुकी हूँ!
मेरे भैया के क़ातिल का कुछ पता चला इन्सपैक्टर जी?
जी आपके भाई के - क़ातिल की खोज में ही जुटा हुआ हूँ! इसी सिल - सिले में मैंने इन दोनों का सहयोग लिया है!
ही-ही-ही! आज तो सुबह से आप ही के काम में इतने बिज़ी थे एक कप - क़ाफ़ी पीने का भी वक़्त नहीं मिला

ओह! मैं अभी आप लोगों के लिए क़ाफ़ी बनाकर लाती हूँ! तब तक आप बातें कीजिए!
ही-ही-ही! आप तो बेकार ही में कष्ट कर रही हैं मिस मनोरमा!
नहीं! नहीं! कष्ट कैसा! आप भी तो मेरे भाई के क़ातिल को खोजने में - मदद कर रहे हैं मि॰ पाटे!
लीजिए! कमाल कर रही हैं आप भी! यह तो काम है हमारा! इसमें कष्ट कैसा?
मनोरमा के किचन में जाने के बाद -
अबे भुखमरे! थोड़ी देर में वो खुद नाश्ते का इन्तज़ाम करती, तुझे खुद कहने की क्या ज़रूरत थी?
थोड़ी देर में!... थोड़ी देर में तो मैं सूखकर काँटा हो जाता
कुछ देर के बाद -
लीजिए। गरमा-गरम क़ाफ़ी - हाज़िर है!
ही-ही-ही! शुक्रिया मिस मनोरमा! क़ाफ़ी के लिए!
हें-हें-हें-हें! आप ने भी आख़िर ~~ क़ाफ़ी बनाने की तक़लीफ़ गवारा ही डाली मिस मनोरम

लीजिए! आप तो मुझे शर्मिंदा कर रहे हैं! मि० पाटे एण्ड काटे!
अजी हमारी ऐसी मजाल कहाँ, जो आप को शर्मिंदा करें!
हो-हो-हो! मैंने बता-था था न मनोरमा जी मि० पाटे बड़े जॉली नेचर के आदमी हैं
मिस मनोरमा! क्या आप अपने भाई मनोहर लाल जोशी की हत्या पर कुछ प्रकाश डालेंगी?
मेरे पास प्रकाश डालने को है ही क्या? मेरा मतलब है मैं इस विषय में कुछ भी नहीं जानती!
जी, जानते तो - हम भी कुछ नहीं हैं पर हम सब मिल कर जानने की - कोशिश कर सकते हैं!
पूछिए! आप लोग क्या पूछना चाहते हैं मुझसे?
जो कुछ भी आप जानती हैं। मि० मनोहर की निजी जिन्दगी के बारे में - वह सब हमें बताइये!
मेरे भाई कॉमिकों में कहानियाँ लिखा करते थे और डेढ़ दो हज़ार के बीच उनकी मासिक आय थी।

मैं पालिका प्लेस के एक ऑफिस में स्टेनो हूँ। मेरी आमदनी भी क़रीब इतनी ही हो जाती है। कुल मिला कर हमारा खर्च ठीक से चल जाता था।
क्या आपको पता था कि आपके भाई सुधा नाम की एक लड़की से प्यार करते थे?
जी हाँ। मुझे मालूम था। वे कभी मुझ से कुछ छिपाते नहीं थे।
क्या हत्या होने से पहले मि० मनोहर ने आपके सामने कोई ऐसी ही आशंका या चिन्ता व्यक्त की थी?
जी नहीं. मगर वो पिछले एक हफ़्ते से कुछ परेशान से ज़रूर थे।
क्या आपने उनसे उनके परेशान होने का कारण पूछा? मनोरमा जी!
जी हाँ। कई बार। मगर उन्होंने कुछ बताया ही नहीं। वो कुछ नहीं कह कर टाल जाते थे।
आपने अभी कहा था कि वे आपसे कुछ छुपाते नहीं थे मिस मनोरमा!
जी हाँ। कहा था। इस से पहले कभी कुछ उन्होंने छुपाया भी नहीं, मैंने सोचा कि शायद सुधा के लिए झगड़ा हो गया होगा।

या कोई व्यवसायिक उलझन होगी! मगर इससे पहले कि कुछ स्पष्ट हो पाता उनकी हत्या हो गई--ऊँ-ऊँ-ऊँ।
अरे! अरे! आप रोइए नहीं मनोरमा जी हिम्मत से काम लीजिए।
हाँ-हाँ। आप रोएँ नहीं, मिसु मनोरमा आप रोएँगी तो -- तो-फिर हमारा क्या होगा?
कुछ और बात जो आप हमें बताना चाह रही हों?
मैं, और क्या बता ऊँ? बस, हमारे सुखी जीवन में आग लग गई! पता नहीं किसी ने क्यों उनकी हत्या कर डाली? मर जाए वो रात के बारह बजे।
देखिए आप चिन्ता न करें! अब केस मेरे हाथ में आ गया है, क़ातिल कहीं छुप नहीं - सकता।
आपको शायद मालूम हो मैंने कितनी सरलता से सिर्फ़ डेढ़ ही दिन में चूहे के बिल में से अपना राज ढूँढ निकाला था... ख़ैर जाने दीजिए। अब मैं अपने मुँह से क्या तारीफ़ करूँ।
ज--ज--जी! म--मौज़ा।
ज--जी। अब आप - इसी बात से इनकी पैनी नज़र का अंदाज़ा लगा लें, कि क़ातिल - और मौज़े में इन्हें कोई फ़र्क़ नज़र नहीं आता।

मनोरमा के घर से हमारी जासूस टीम मिस सुधा के फ्लैट पर, हौज़-ख़ास -
में जा धमकी! सुधा भी घर ही पर मिल गई।
आइये आइये इन्सपैक्टर साहब! गुड आफ़्टर नून।
गुड नून! मिस सुधा! इनसे मिलिए - आप हैं प्राइवेट डिटैक्टिव पाटे एण्ड काटे! क़ातिलों को मौज़ों की तरह ढूंढ निकालते हैं!
ज-जी!
ही-ही-ही-ही! इनका मतलब है क़ातिल को पकड़ना हमारे लिए खोया हुआ मौज़ा ढूंढने जैसा ही काम है!
अरे! मि० पाटे! आप का कुत्ता हिन्दी भी बोलता है! ....
गुर्र! गुर्र--!! काट लूँगा!
जी, बोलता तो यह - अँग्रेज़ी भी है, पर इसे कुत्ता कहलाना पसंद नहीं! आप अगर महिला न होतीं तो अभी आप को कटवाता!

जंगल

साही

साही एक प्रकार का चूहा होता है जिसकी चमड़ी काँटों वाले पंखों से ढकी रहती है। यह कांटेदार पंख इसको इसके परभक्षी से बचाने में मदद करते है। साही तीसरा सबसे बड़ा चूहाहोता है। साही करीब 25 से 36 इंच लंबे होते है और इनकी पूंछ 8 से 10 इंच लंबी होती है। इनका वज़न 5.4 से 16 किलोग्राम के बीच होता है। यह गोल, बड़े और हल्के होते है। साही भूरे, ग्रे और सफेद रंग में पाए जाते है। साही शाकाहारी होते है और यह पेड़ की लकड़ियाँ, हरे पेड़ और वृक्ष की खाल खाते है। साही कभी–कभी पेड़ों पर चढ़कर भी अपना खाना तलाश करते है। साही एशिया, दक्षिण यूरोप, अफ्रीका, पूर्वी और दक्षिण अमेरिका में पाए जाते है। साही जंगल, रेगिस्तान, पहाड़ों के बीच और घासभूमि पर रहते है। साही नमक की खोज में लकड़ी पर लगी सोडियम नाइट्रेट, पेंट, कपड़े, चप्पलों को भी खा जाते है। साही उन जगह से ज़्यादा आकर्षित होते है जहाँ सेंधा नमक को बर्फ पिघालने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

डोनॉल्ड की उम्र

दोस्तो, डोनॉल्ड डक को आप टेलीविजन पर देखते होंगे। आपको डोनॉल्ड पसंद भी होगा। पर क्या तुम जानते हो कि डोनॉल्ड डक की उम्र कितनी है ?

नहीं पता, तो चलों हम आपको बताते है। डोनॉल्ड डक की उम्र है पूरे 81 साल। चौंक गए ना। 9 जून 1934 को डोनॉल्ड डक पहली बार जनता के सामने आया था। डोनाल्ड डक की रचना की थी कार्ल बार्क्स ने। तब से लेकर अब तक डोनॉल्ड बच्चों और बड़ों का मनोरंजन कर रहा है। डोनॉल्ड डक की सबसे बड़ी विशेषता है, उसकी आवाज़। क्लेरेंस नेश नामक कलाकार ने डोनॉल्ड डक को अपनी आवाज़ दी। डोनॉल्ड के जन्म से लेकर 1985 तक क्लेरेंस डोनॉल्ड को अपनी अवाज़ देते रहे लेकिन 1985 के बाद से टोनी एन्सेल्मो डोनॉल्ड को अपनी आवाज़ दे रहे है। डोनॉल्ड के तीन भतीजे हुई- ड्यूई और लुई भी कम मज़ेदार नहीं हैं। इन तीनों के आने के बाद डोनॉल्ड डक अंकल बन गए। डोनॉल्ड की एक प्रेमिका भी है, डेजी। डोनॉल्ड डक के आने से पहले लोग मिकी माउस को बहुत पसंद करते थे। इसलिए शुरूआत में डोनॉल्ड और मिकी माउस साथ-साथ आते थे। बाद में मिकी की तरह लोग डोनॉल्ड को भी चाहने लगे। आज भी डोनॉल्ड से लोग बहुत प्यार करते हैं उसकी तरह आवाज़ निकालने की कोशिश करते हैं।

बाल कहानी

सबसे दुखी आदमी..

एक राजा अत्यन्त निर्दयी और अत्याचारी था। वह जनता को हर तरह से दु:ख और कष्ट दिया करता। सारी जनता राजा के व्यवहार से दु:खी रहती है।

अचानक एक दिन उस राजा के राज्य में एक साधु आया। जनता ने उसे अपना दु:ख दर्द सुनाया। सब कुछ सुनकर साधु बोला, 'धैर्य रखो, मैं राजा को सही राह पर ले आऊंगा।

इतना कहकर साधु सीधे राजा के पास जा पहुंचा राजा ने साधु को प्रणाम कर कहा, 'आप की क्या सेवा करूं?'

'तुम्हारा दु:ख मै दूर करने आया हूं, राजन।' साधु बोला 'मगर मुझे तो कोई दु:ख नहीं है सब कुछ है मेरे पास, राजा ने

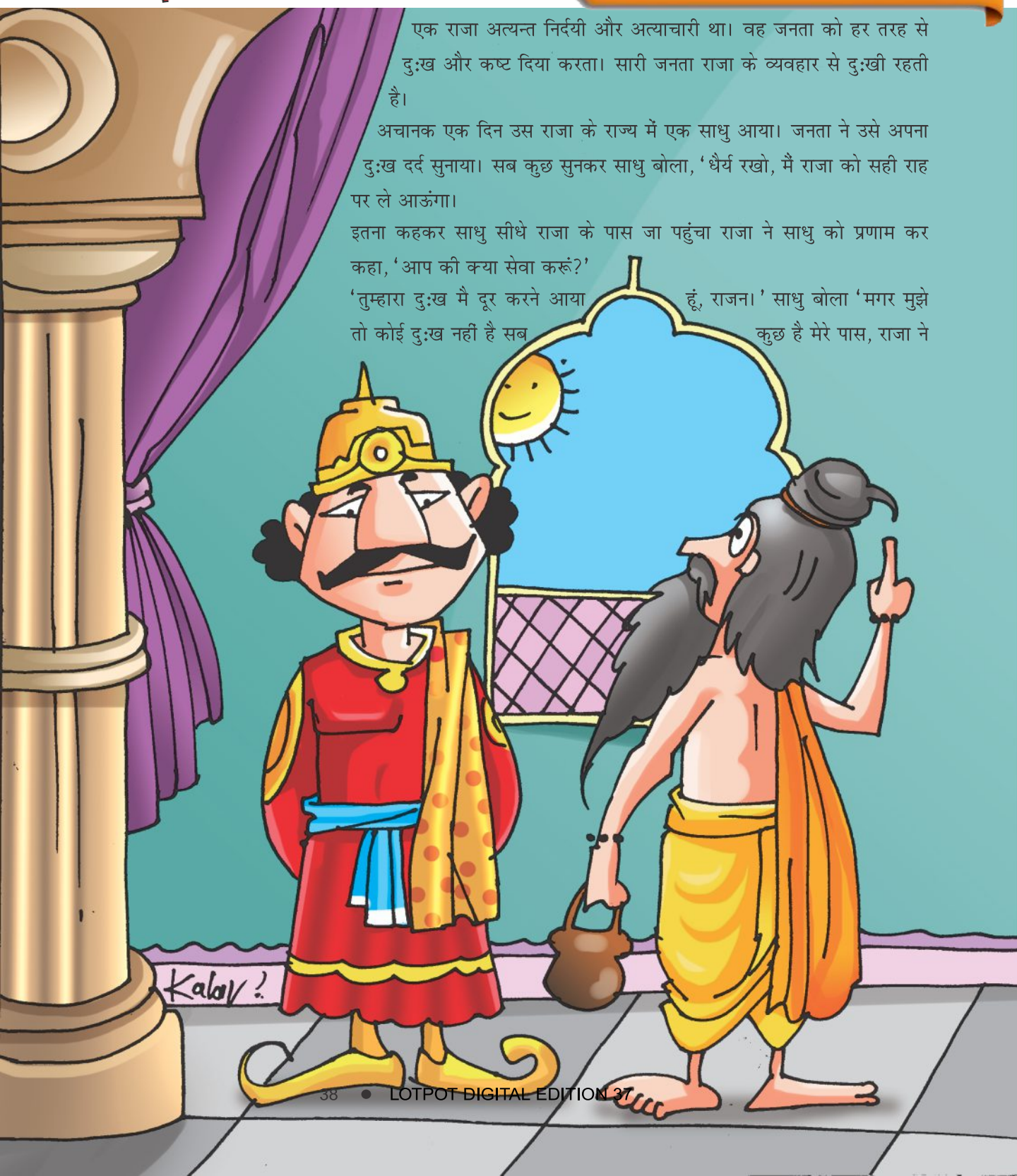

बताया।

'यह तुम्हारी भूल है', साधु ने कहा, 'सच्चाई तो यह है कि तुम जैसा दु:खी आदमी इस राज्य में कोई नहीं है।'

राजा को साधु की बात अटपटी जान पड़ी। बिल्कुल समझ में नहीं आई। वह पूछ बैठा, 'ऐसा आप क्यों कह रहे है?'

'देखो, कोई व्यक्ति दूसरे को क्या दे सकता है? साधु ने राजा से सवाल किया।

'जो उसके पास होगा।' राजा ने उत्तर दिया।

सही कहना है, 'साधु बोला, 'जो चीज जिस के पास है ही नही, वह चीज वह दूसरे को कैसे देगा, नही दे सकता है न। असंभव है देना।, 'एकदम'

'तुमने आज तक अपनी जनता को केवल दुख ही दिया है न। इसी आधार पर मैने सोचा कि तुम अपने राज्य के सबसे दुखी आदमी हो, 'साधु ने आगे कहा, अगर सचमुच तुम सुखी होते तो अपनी जनता को सुख देते, सुख बांटते लुटाते।' राजा ने साधु के कहने का मर्म अच्छी तरह समझ लिया। वह काफी लज्जित हुआ। झट साधु के चरणों पर गिरकर उसने क्षमा मांगी और कहां, 'आज से मै अपनी जनता को किसी तरह का दुख नहीं दूगा। उसे आवश्यक सुख सुविधाएं मुहैया कराऊंगा।

'जनता की भलाई करना ही राजा का धर्म होता है, 'कहकर साधु अपनी राह चला गया।

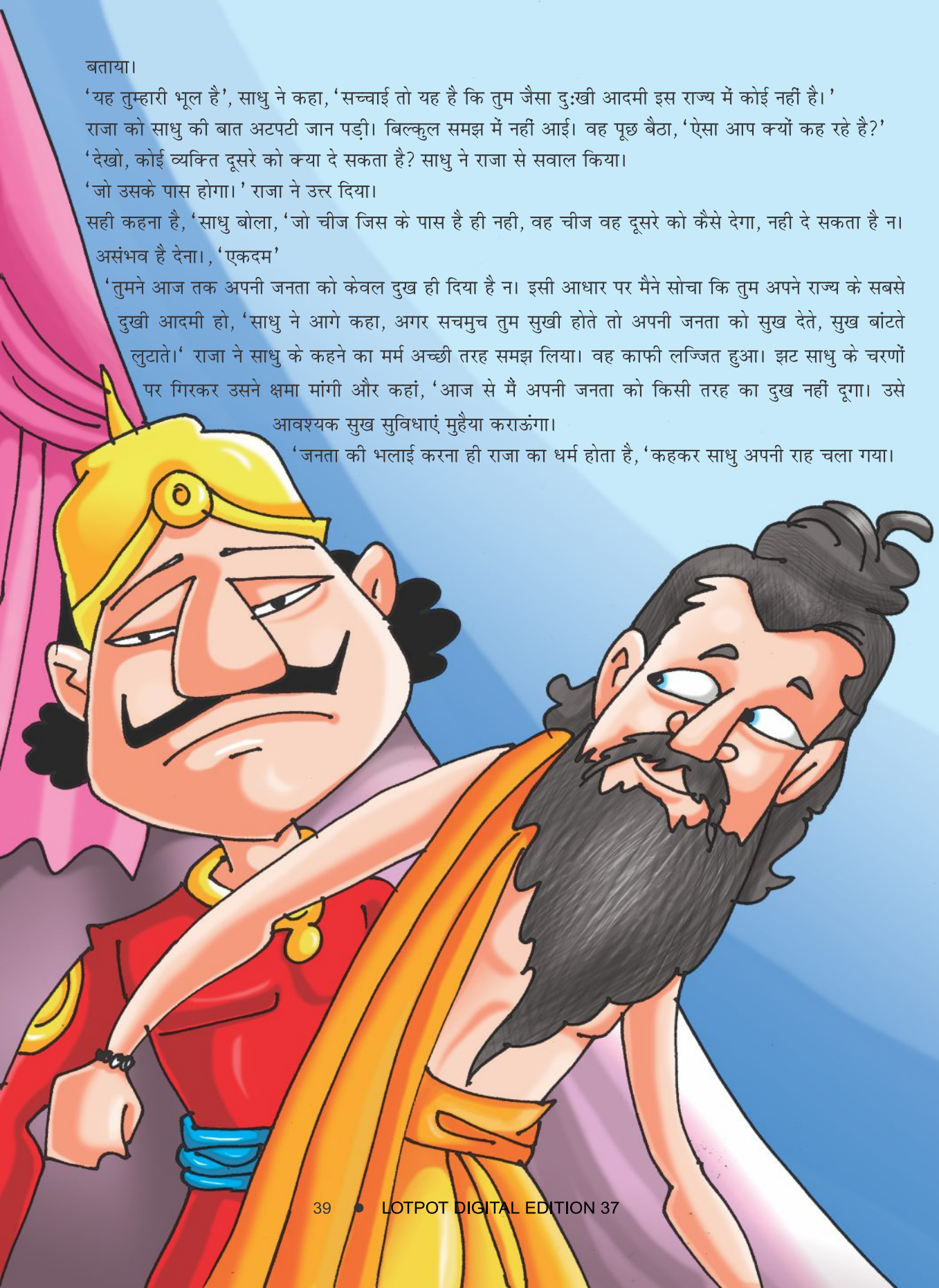

उम्र महज 8 साल और स्पेस में खोजे 18 एस्टेरॉयड, दुनिया की सबसे युवा एस्ट्रोनोमर बनीं निकोल ओलिवेरा!

नासा से जुड़े हुए एक प्रोग्राम 'एस्टेरॉयड हंटर्स' के तहत निकोल ओलिवेराने 18 एस्टेरॉयड को खोजा है.

ब्राजील के फोर्टालेज की रहने वाली आठ वर्षीय निकोल ओलिवेरा दुनिया की सबसे युवा एस्ट्रोनोमर बन गई हैं. ओलिवेरा ने अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा से जुड़े एस्टेरॉयड ढूंढने के प्रोग्राम में हिस्सा लिया. युवा एस्ट्रोनोमर के परिवार के मुताबिक अभी तक ओलिवेरा ने 18 स्पेस रॉक को ढूंढ निकाला है. बहुत ही कम उम्र से ही ओलिवेरा को स्पेस में दिलचस्पी थी और वो चलना सीखने के दौरान ही तारों को देखकर अपनी बांहें फैला देती थी.

नासा के साथ काम करने के बाद महज आठ साल की उम्र में निकोल ओलिवेरा को 'दुनिया की सबसे युवा एस्ट्रोनोमर' कहा गया है. अमेरिकी स्पेस एजेंसी के जिस प्रोजेक्ट से ओलिवेरा जुड़ी हुई हैं, उसे 'एस्टेरॉयड हंटर्स के नाम से जाना जाता है. इसका मकसद युवा लोगों की उनके द्वारा किए जाने वाले खोज के जरिए साइंस में दिलचस्पी को बढ़ाना है. परिवार के मुताबिक, आठ वर्षीय बच्ची का पूरा कमरा सौरमंडल की तस्वीरों से भरा हुआ है. इसमें छोटे रॉकेट से लेकर स्टार वॉर की तस्वीरें शामिल हैं. वो कंप्यूटर के जरिए भी काम करती हैं. इसके अलावा, अपने टेलिस्कोप से स्पेस रॉक का पता लगाती हैं.

एस्टेरॉयड का नाम इनके नाम पर रखने की योजना

'एस्टेरॉयड हंटर्स' का संचालन 'इंटरनेशनल एस्ट्रोनोमिकल सर्च कोलेबोरेशन' द्वारा किया जाता है, जो नासा से जुड़ा हुआ एक सिटिजन साइंस प्रोग्राम है. निकोल ओलिवेरा इस प्रोजेक्ट से इसलिए जुड़ पाई हैं, क्योंकि ब्राजील का विज्ञान मंत्रालय नासा और अन्य के साथ काम करने वाले साझेदारी संगठनों में से एक है. उत्साह के साथ बात करते हुए निकोल ने बताया कि उन्होंने अभी तक 18 एस्टेरॉयड का पता लगा लिया है और उनकी योजना इन्हें ब्राजीलियाई वैज्ञानिकों और अपने परिवार के सदस्यों के नाम पर नाम देने की है. उन्होंने बताया कि वे एस्टेरॉयड को अपने माता-पिता का नाम भी देना चाहती हैं.

लुइगी सैनिनो का रिकॉर्ड तोड़ेंगी ओलिवेरा

ओलिवेरा एकेडमी स्कॉलरशिप पर पूर्वोत्तर ब्राजील के फोर्टालेजा शहर में एक निजी स्कूल में पढ़ती है. निकोल ओलिवेरा द्वारा खोजे गए 18 एस्टेरॉयड की स्पेस रॉक के रूप में पुष्टि करने में कई साल का वक्त लगेगा. लेकिन अगर ये सच में स्पेस रॉक निकलते हैं तो ओलिवेरा आधिकारिक रूप से एस्टेरॉयड को खोजने वाली दुनिया की सबसे कम उम्र की व्यक्ति बन जाएंगी. वह इतालवी शौकिया एस्ट्रोनोमर लुइगी सैनिनो द्वारा स्थापित रिकॉर्ड को तोड़ देंगी. दरअसल, सैनिनो ने 1998 और 1999 में 18 साल की उम्र में दो एस्टेरॉयड का पता लगाया था.

मिलिए सबसे कम उम्र के स्टार्टअप कारोबारी शाश्वत नकरानी से, जिसने हुरून इंडिया रिच लिस्ट 2021 में बनाई जगह

अगर सच्ची लगन से मेहनत की जाए तो आसमान की बुलंदियों को छूने से कोई नहीं रोक सकता. ये तो अक्सर सभी ने सुना होगा और कई लोग ऐसे हैं जिन्होंने इसे सच भी कर दिखाया है. लेकिन महज 23 साल की उम्र में अगर कोई ये कारनामा कर दिखाए तो यकीन करना थोड़ा मुश्किल हो जाता है. शाश्वत नकरानी वो शख्सियत है जिन्होंने साबित कर दिया कि मेहनत हमेशा रंग लाती है.

आईआईएफएल वेल्थ हुरून इंडिया रिच लिस्ट 2021 जारी हो गई है. इस लिस्ट में 46 स्टार्टअप संस्थापकों ने जगह बनाई है, जिसमें से एक नाम शाश्वत नकरानी का, जो इस लिस्ट में सबसे कम उम्र के स्टार्टअप कारोबारी हैं. तो चलिए जानते हैं इनके बारे में:-

4 साल पहले बनाया था भारतपे पेमेंट ऐप

शाश्वत नकरानी ने आज से 4 साल पहले 2018 में महज 19 साल की उम्र में अश्नीर ग्रोवर के साथ मिलकर भारतपे क्यूआर कोड बनाया था. आज भारतपे इतना ज्यादा सक्सेसफुल हो चुका है कि शाश्वत का नाम सबसे कम उम्र के सेल्फ मेड इंडीविजुअल के तौर पर IIFL वेल्थ हुरून इंडिया रिच लिस्ट 2021 में आ गया है. नकरानी हुरून इंडिया रिच लिस्ट 2021 में उन 13 लोगों में शामिल हैं, जो 1990 के बाद पैदा हुए हैं.

बाल कहानी

दूर का ढोल सुहाना

–सुलेना मजुमदार अरोरा

एक गाँव में बहुत सारे चूहे रहते थे। दिन भर वे खेतों से ताज़ी ताजी सब्जियां तोड़ कर लाते और मजे से खाते थे। एक दिन जब चूहों का सरदार खेत से ककड़ी तोड़ रहा था तो उसे एक नन्हा चूहा रास्ते में बैठा दिखा। वो बहुत घबराया दिख रहा था। सरदार चूहे ने उस नन्हे चूहे से पूछा, ''तुम कौन हो बेटा?" ये सुनते ही बच्चा रोने लगा। उसने बताया कि वो शहर में रहता है और अपने मातापिता के साथ गाँव का मेला देखने आया था और खो गया।" सरदार चूहा उसे अपने घर ले गया और भरपेट खाना खिलाया। फिर वो नन्हे चूहे के साथ उसके माता पिता को ढूंढने निकले। मेले के पास उसे दो परेशान चूहे दिखे। नन्हा चूहा ने कहा, ''अरे यही तो मेरे माता पिता है।" खुशी से दौड़ कर वो उनसे लिपट गया और उन्हें सारी कहानी सुनाई। तब शहरी चूहे ने गांव के चूहे सरदार को धन्यवाद दिया और अपने घर का पता देते हुए दावत पर बुला लिया।

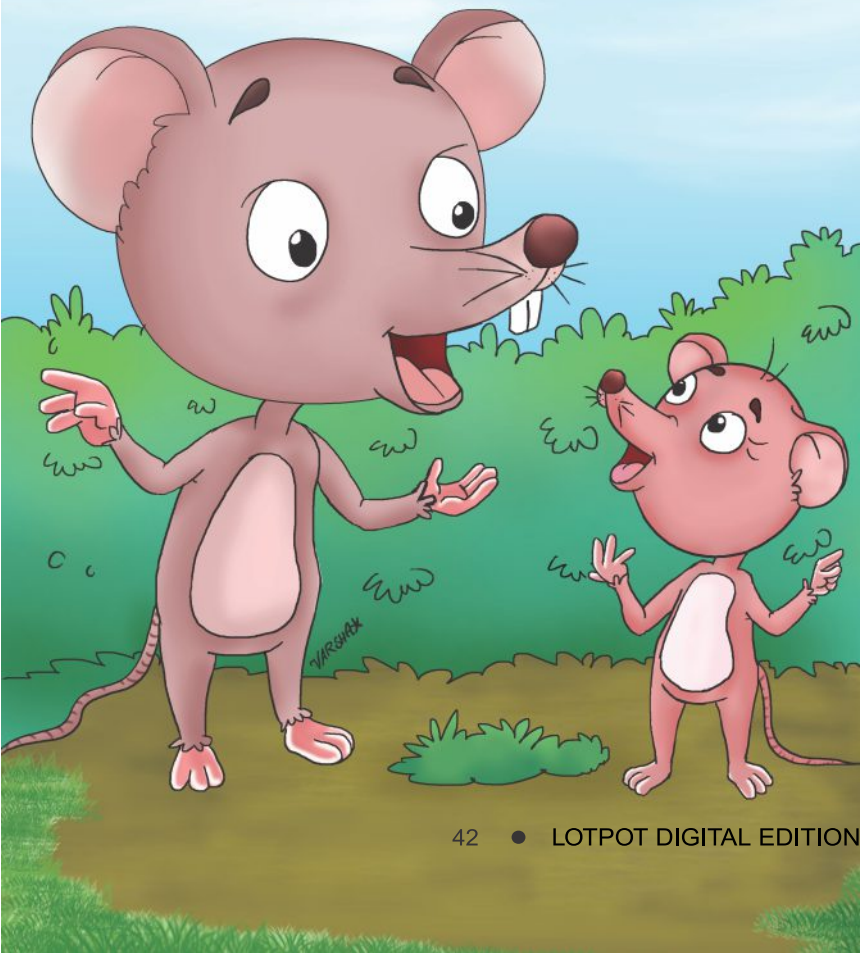

अगले दिन सही वक्त पर चूहा सरदार अपने परिवार के साथ शहर के एक आलीशान बिल्डिंग के पास पहुँचा जहां शहरी चूहा उसका इंतजार कर रहा था। इतना सुंदर बिल्डिंग देखकर गाँव के चूहे खुश हो गए। तब शहरी चूहे ने कहा, '' घर के अंदर चलो, सुंदर टेबल पर स्वादिष्ट ब्रेड, मक्खन, बिस्किट, बिरयानी, मिठाई सब है, जो तुम सबने कभी नहीं खाया होगा।" ये सुनकर चूहे सरदार की पत्नी बोली, ''काश! मैं भी अपने परिवार के साथ शहर रह पाती।" थोड़ी देर में शहरी चूहा मेहमानों को पाइप के रास्ते फ्लैट के किचन में ले गया। अभी वे अंदर घुसे ही थे कि शहरी चूहे ने सबको जल्दी से किचन कैबिनेट के पीछे छुप जाने को कहा। सब चूहे छुप गए।

तभी कुछ इंसान डाइनिंग टेबल पर खाना खाने बैठे। सब लोग बिरयानी, पास्ता, नूडल्स, आइस क्रीम खाने लगे। यह देखकर गाँव के चूहे परिवार को बहुत भूख लगी लेकिन टेबल तक जाए कैसे? एक घँटे बाद जब सब लोग उठ कर चले गए तो प्लेट में बचे खुचे जूठन पर सारे चूहे टूट पड़े लेकिन तभी घर की नौकरानी वहाँ आ गई और डंडा उठा कर चुहों को भगाने लगी। जैसे तैसे सभी चूहे वहां से भागे। नीचे उतर कर गाँव के चूहे सरदार ने शहर के चूहे से पूछा, ''क्या हर रोज तुम्हे इसी तरह छुपकर खाना पड़ता है?" शहर के चूहे ने कहा, ''हाँ", जिस पर गाँव के चूहे बोले, ''इससे तो हमारा गाँव का घर ही अच्छा है, जब मजे से हम ककड़ी, टमाटर, गाजर तोड़ के खाते हैं और अपने बिल में चैन से रहते हैं। दूर का ढोल वाकई सुहाना होता है पर सच्चा नहीं।"

इस कहानी से हमें ये सीख मिलती है कि जो दिखता है वो अक्सर सच नहीं होता इसलिए किसी के कहने पर बहकना नहीं चाहिए।

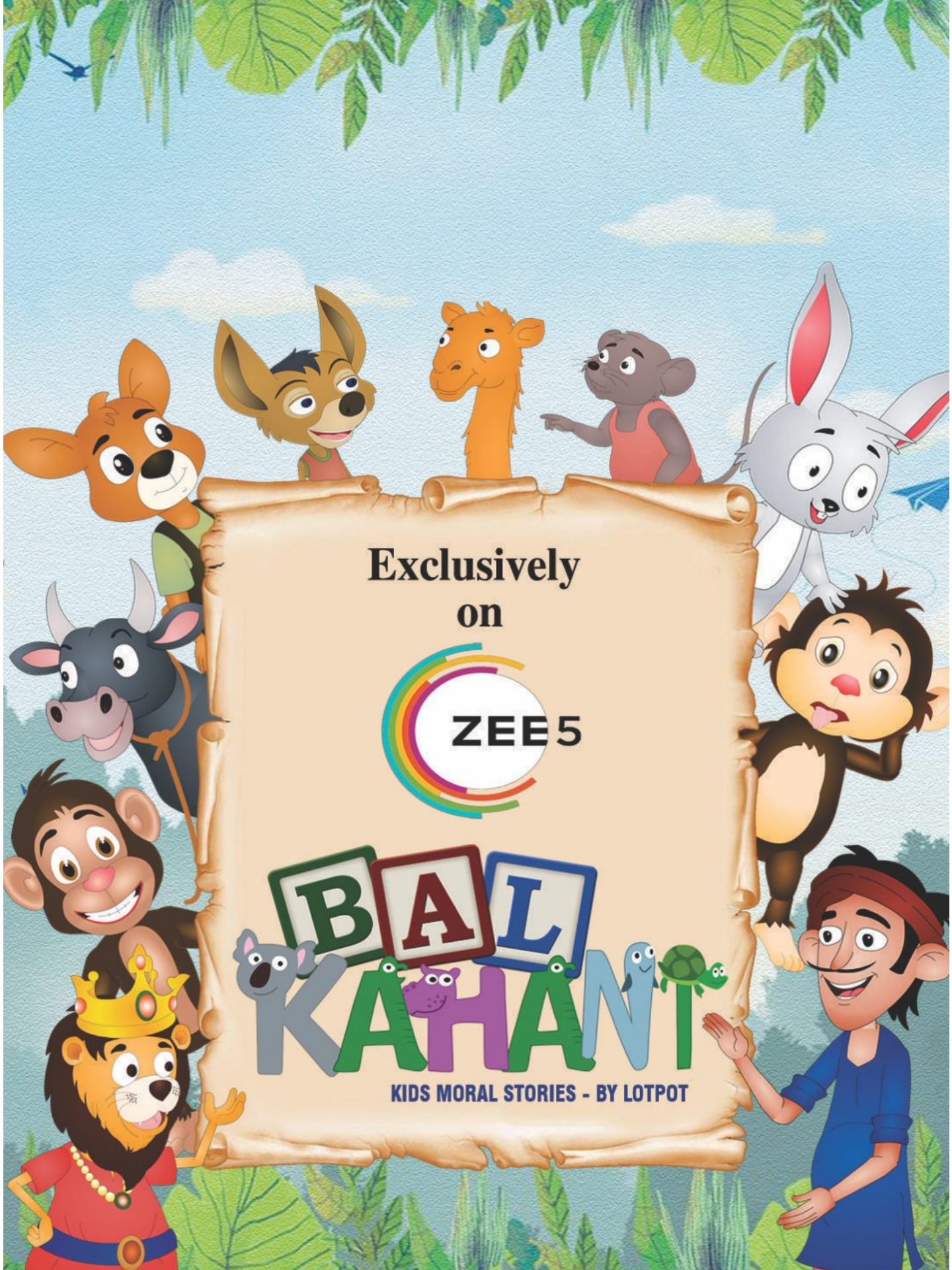
Exclusively
on
ZEE5
BAL
KAHANI
KIDS MORAL STORIES - BY LOTPOT